REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

भारतीय संदर्भ में मीडिया और सामाजिक विकास

Smt. Keerti Anand
Assistant Professor Sociology ,
Prem Kishan Khanna Government Degree College, Jalalabad Shahjahanpur.

प्रस्तावना:-

भारत में जन माध्यमों को आरंभ में एक महत्वपूर्ण विकास के साधन के रूप में माना गया। सामाजिक और धार्मिक सुधारों में राष्ट्रवादी अखबारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है विभिन्न समाज सुधारकों के प्रयासों को कोने-कोने तक पहुंचाने में मीडिया एवं जन माध्यमों ने एक गति प्रदान की है। ग्रामीण विकास, महिलाओं की जागरूकता समाज के वंचित तबकों की समस्याओं के निराकरण संबंधी कार्यक्रम अथवा राष्ट्र के विकास संबंधी कार्यक्रम सूची सभी के लिए मीडिया एक विकासशील माध्यम रहा है।

सामाजिक जनहित हेतु प्रसारण:-

भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत 15 जुलाई 1927 ईस्वी को इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी के रूप में हुई। इससे पहले मुंबई मद्रास कोलकाता में रेडियो क्लब थे। शुरुआत में इसका प्रयोजन केवल जनहित संबंधी कार्यक्रम बढ़ाना था किंतु घाटे के चलते इसे सरकार ने अधिग्रहण कर लिया और 1 अप्रैल 1930 को अधिग्रहण उपरांत नया नाम इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन रखा गया। उस वक्त ब्रिटिश शासन था जिसके फलस्वरूप 1935 ईस्वी में इंडियन वायरलेस टेलीग्राफी एक्ट 1935 में अस्तित्व में आया जिसमें खतरे से निपटने के लिए गवर्नर जनरल को असीमित अधिकार दे दिए गए।

ब्रिटिश सरकार ने भारतीय प्रसारण को राजनीतिक हथियार बना लिया था या काफी हद तक केंद्रीकृत और नियंत्रित था। ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यक्रम स्थानीय भाषाओं में प्रसारित होते थे और गांव में सामुदायिक सेटों का भी इंतजाम किया गया था लेकिन प्रसारण सेवा का मूल मकसद राजनीतिक ही था दूसरे विश्व युद्ध के आरंभ के वक्त महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन की आवाज के शोर को दबाने के मकसद से रेडियो सेवाओं का प्रसार किया गया साथ ही यह तय किया गया कि इस पर सरकारी नियंत्रण सख्त बना रहे आजादी के वक्त देश में 9 आकाशवाणी केंद्र थे लेकिन किसी भी राष्ट्रवादी नेता की पहुंच उन तक बड़ी मुश्किल से होती थी। महात्मा गांधी भी सिर्फ रेडियो पर एक बार बोल सके वह भी आजादी के बाद और अपनी मृत्यु से 3 माह पहले। वे अपने आंदोलन को सफल बनाने के लिए समाचार पत्रों को माध्यम बनाते थे। जैसे समाचार पत्रों में यंग इंडिया, इंडियन ओपिनियन, हरिजन और अन्य राष्ट्रवादी अखबारों का साथ लिया । देश की जनता से जुड़ने के लिए पारंपरिक माध्यमों को अपनाते हुए उन्होंने प्रार्थनाओं, भजन, गोष्ठियों और लोक माध्यमों का अद्भुत इस्तेमाल किया था।

सन् 1970 में टेलीविजन को लेकर दो अहम प्रयोग किए गए। जिनका मकसद सामाजिक बदलाव करना था। जिसमें साईट-सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट और खेड़ा संचार परियोजना थी।

सन 1967 में भारत सरकार के सहयोग से यूनेस्को ने एक विशेषज्ञ आयोग का गठन किया। जिसका मकसद विकास में सेटेलाइट संचार का प्रयोग करना था। उड़ीसा, मध्य प्रदेश बिहार, राजस्थान, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के 2400 गांव में कार्यक्रम प्रसारित किए गए। दिल्ली और अहमदाबाद स्थित अर्थ स्टेशनों से हर दिन 4 घंटे के कार्यक्रम प्रसारित किए गए। यह कार्यक्रम शिक्षा कृषि स्वास्थ्य और परिवार नियोजन पर थे। आकाशवाणी कार्यक्रमों जिनमें दिल्ली हैदराबाद और कटक शामिल थे। इनके लिए एक कार्ययोजना बनाई गई। जिसके लिए समिति का गठन किया गया। जिसमें केंद्र और राज्यों के प्रतिनिधि विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञ शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेजों के प्रशिक्षक और कार्यकर्ता शामिल थे। इसरो द्वारा ऑडियो विजुअल इंस्पेक्शन डिवीजन बनाया गया। जिससे कि कार्यक्रमों का मन वांछित निर्माण किया जा सके।

टेलीविजन को शिक्षा व्यवस्था के रूप में स्थापित करने हेतु स्कूल टेलीकास्ट चलाया गया। इसके तहत डेढ़ घंटे स्कूली बच्चों के लिए निर्धारित किए गए। इसमें 5 वर्ष आयु से 12 वर्ष तक के बच्चों को लिया गया। इस अवधि में हर दिन 22:00 मिनट कार्यक्रम तेलुगू कन्नड़, उड़िया और हिंदी में प्रसारित किए गए, साथ ही सामाजिक जागरूकता के कार्यक्रम संचालित किए गए। इन कार्यक्रमों में स्कूल को रोचक बनाना, स्कूल छोड़ने वालों की संख्या में कमी लाना, बच्चों की अवधारणा और कौशल विकसित करना, सौंदर्य के प्रति संवेदना विकसित करना था। स्वस्थ जीवन के साथ-साथ समाज में आधुनिकता लाने के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया गया।

बाद में इसरो ने सन् 1977 में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें बताया गया कि स्कूल छोड़ने का मुख्य कारण आर्थिक था। यह भी निष्कर्ष निकला, कि स्कूल छोड़ने के लिए विद्यार्थी जिम्मेदार नहीं थे, बल्कि आर्थिक वजह से जब तक मां- बाप अपने बच्चों को बाल मजदूर बनाना बंद नहीं करते, स्कूल छोड़ने की दर में फर्क नहीं पड़ने वाला।

कृषि क्षेत्र में भी कृषि मंत्रालय द्वारा विभिन्न उद्देश्य तय किए गए इसमें:-

१. खेती संबंधी सूचनाओं का प्रसार, कम बारिश वाली जगह पर खेती के तौर-तरीकों का प्रदर्शन, मुर्गी और पशुपालन का महत्व, फसलों और उसके प्रबंधन के बारे में जानकारी दिया जाना।
२. बीज, खेती, बिक्री, ऋण खेती से संबंधित जिलों के संगठनों के बारे में सूचना प्रसारण किया जाना। कीटनाशकों के बारे में सलाह के साथ-साथ मौसम संबंधी भविष्यवाणियों और बाजार की जानकारी देना। सफल किसानों की कहानियों का प्रसार तथा किसानों से संबंधित अन्य समाचार प्रसारित किया जाना था।

इसरो के मुताबिक साइट धारा फायदा तो हुआ लेकिन इतनी प्रबलता से लक्ष्य हासिल नहीं कर सका। किसानों द्वारा केवल उन सलाहो को माना गया, जिसमें अतिरिक्त आर्थिक लागत नहीं थी। स्वास्थ्य के क्षेत्र में तथा परिवार नियोजन संबंधी कार्यक्रमों में भी मीडिया ने अपनी भूमिका निभाई। मीडिया कर्मियों के लिए साइड का अनुभव सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर दोनों नजरियों से काफी अहम था। महिलाओं और बच्चों के कार्यक्रमों में नाटकीय रूप से गिरावट दर्ज की गई। जिसमें अनुमान यह लगाया गया कि कार्यक्रम में अधिकारियों की उचित भागीदारी नहीं हो पाई थी।

अधिकांश दर्शकों ने टेलीविजन को शिक्षा और विकास के माध्यम के बजाय मनोरंजन का जरिया समझा। योजना आयोग और अहमदाबाद स्थित स्पेस एप्लीकेशन के मूल्यांकन अध्ययनों के मुताबिक खेती और परिवार नियोजन के तौर तरीकों को अपनाने के मामले में खास सफलता नहीं हासिल हुई। बच्चों द्वारा विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम और महिलाओं द्वारा स्वास्थ्य एवं पोषण कार्यक्रमों द्वारा नाममात्र को सीखा गया। अधिकांश दर्शकों के लिए कार्यक्रम समझ से परे था। हिंदी भाषी क्षेत्र में कार्यक्रम की भाषा के प्रति लोगों की नाराजगी रही। योजना आयोग के मूल्यांकन ने पाया कि पशुपालन के क्षेत्र में 72 फ़ीसदी, कृषि में 60% और स्वास्थ्य में 45% जानकारी में वृद्धि दर्ज की गई। अध्ययन में यह भी पाया गया कि 75 फ़ीसदी लोगों ने विकास कार्यक्रम को मोटे तौर पर लाभकारी माना। लोगों द्वारा यह भी माना गया कि स्थानीय रीति-रिवाज विश्वास और प्रथाएँ तेजी से पुष्टि हुई।

अहमदाबाद के स्पेस एप्लीकेशन सेंटर ने खेड़ा संचार परियोजना ने खासी सफलताएं अर्जित की। यह परियोजना 14 साल तक लागू रही। खेड़ा गुजरात का एक छोटा सा जिला है, जो दो आदिवासी जिलों और विकसित जिला अहमदाबाद और बड़ौदा से सटा हुआ है। खेड़ा में 607 सामुदायिक टेलीविजन सेट 443 गांव में लगाए गए। जिनका स्वामित्व समुदाय के पास था। लेकिन इनकी देखभाल और मरम्मत की जिम्मेदारी राज्य सरकार की थी। यह सेट दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों या ग्राम पंचायत में रखे जाते थे। दूरदर्शन और स्पेस एप्लीकेशन सेंटर की मदद से लगभग 1 घंटे प्रतिदिन कार्यक्रमों का प्रसारण होता था। कार्यक्रमों का

मकसद लोगों में आत्मविश्वास जगाना, बराबरी की भावना विकसित करना और सामाजिक तथा आर्थिक जागरूकता पैदा करना था। यह भी प्रयास किया गया कि गरीबों में अंधविश्वास, फिजूलखर्ची और बाल विवाह जैसी कुरीतियों से आजाद किया जाए और नए कौशल विकसित किए जाए।

खेड़ा का मूल्यांकन, दर्शन एवं ग्रामीण प्रसारण:

खेड़ा पर एक दशक तक चार मूल्यांकन अध्ययन किए गए। जिनसे पता चला कि महिलाओं ने पुरुषों से ज्यादा टीवी के जरिए ज्ञान अर्जित किया। स्वास्थ्य पोषण और परिवार नियोजन के क्षेत्र में खासी उपलब्धियां रही। इसकी एक वजह समुदाय के साथ टेलीविजन देखना माना गया क्योंकि इससे पहले महिलाओं का आमतौर पर जन माध्यमों के साथ अनुभव कम था साथ ही शहरी जीवन से भी उनका संबंध कम होता था। खेड़ा टीम के द्वारा प्रसारित कार्यक्रम केवल ज्ञान और जागरूकता तक ही सीमित नहीं है। बल्कि कार्यक्रमों द्वारा कृषि, स्वास्थ्य और पशुपालन से लोगों का संपर्क स्थापित करने की कोशिश की गई।

भूमिहीन खेतिहर मजदूरों और उनके परिवारों के लिए कुटीर उद्योग पर श्रृंखला आरंभ हुई। टीम द्वारा उनके प्रशिक्षण, कर्ज आदि की व्यवस्था की। विकास की एक समग्र तस्वीर पेश करने और किसानों के लिए लाभदायक रोजगार पैदा करने के लिए वैज्ञानिकों एवं नौकरशाहों का सहयोग लिया गया।

खेड़ा संचार प्रोजेक्ट के प्रमुख मकसद थे। जिसमें-

१.सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में मौजूद शोषण और बंधन को बेनकाब करना और लोगों की समझ को विकसित करना।

२. समुदाय में आत्मनिर्भरता की भावना बढ़ाना और बंधनों को आजाद करना।

इस तरह कार्यक्रमों का उद्देश्य परिवर्तन करना, जड़त्व से आजादी दिलाना था। इन कार्यक्रमों द्वारा सामाजिक बदलाव, जागरूकता, शिक्षा और आर्थिक विकास की आवश्यकता को बल प्रदान करने का प्रयास किया गया।

टेलीविजन को विकास और बदलाव का एक सशक्त माध्यम माना गया। आगे आने वाले समय में यूनेस्को के सहयोग से पुणे में 1959 में रेडियो रूरल फोरम परियोजना प्रारंभ की गई। 70 के दशक के आरंभ में देश में तकरीबन 70000 सामुदायिक रेडियो से थे। ट्रांजिस्टर क्रांति धीरे-धीरे असर दिखा रही थी। 90 के दशक के मध्य में आकाशवाणी और जन संगठनों की पहल पर स्थानीय रेडियो को पुनर्जीवित करने की कोशिश हुई। 1996 में रेडियो पर एक सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें 60 लोगों जिनमें आकाशवाणी, विश्वविद्यालय, गैर सरकारी संगठनों, पत्रकारों और प्रसारण संगठनों के कर्मी शामिल थे। रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों का जोर स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, नारी सशक्तिकरण, माइक्रो क्रेडिट, वॉटर शेड मैनेजमेंट, ग्रामीण विकास और अनौपचारिक शिक्षा पर था।

1966 इसवी से आकाशवाणी किसानों को खाद, कीटनाशकों, बीज आदि के बारे में जानकारी प्रसारित की गई। प्रसारण का लक्षित वर्ग खासकर गांव का अभिजात्य वर्ग रहा है। सारे आकाशवाणी केंद्र किसानों के लिए कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। साठ के दशक में आकाशवाणी केंद्र में परिवार नियोजन प्रसार अधिकारियों की नियुक्ति की गई। वे सरकार और स्वैच्छिक अधिकारियों के साथ सहयोग से काम करते थे। रेडियो, फिल्म और प्रेस ने परिवार नियोजन का प्रचार जोर-शोर से किया। यह प्रचार आपातकाल में अपने उफान पर पहुंच गया था। **नेशनल इंस्टीट्यूट आफ कम्युनिटी डेवलपमेंट हैदराबाद** द्वारा कराए गए अध्ययन के मुताबिक इस प्रचार कार्यक्रम के जरिए लोगों को परिवार नियोजन के सिद्धांत और व्यवहार पक्ष की जानकारी दी गई।

भारत के पारंपरिक संचार माध्यम और विकास :-

संचार के क्षेत्र में भारत में पारंपरिक माध्यम ने एक बेहद अहम भूमिका निभाई है। इस माध्यम ने नए विचारों को प्रसार किया और नए विचारों को लोकप्रिय बनाया। साथ ही राजनैतिक और सामाजिक स्थितियों से तालमेल बिठाने में मदद की है। नाटक, संगीत, नृत्य, धार्मिक कार्यक्रम को स्थानीय परिस्थितियों, लोक भाषा और लोकहित के अनुरूप ढाला गया। केंद्र सरकार द्वारा भी विकास के लक्ष्य को हासिल करने के लिए लोक माध्यमों के महत्व को समझा गया। सरकार द्वारा सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत गीत एवं नाटक प्रभाग की स्थापना की गई। कार्यक्रमों में लोक नाटक, कविता पाठ, मुशायरा, कव्वाली, कठपुतली प्रदर्शन, भागवत कथा, हरि कथा, लोकगीत, लोक नृत्य आदि शामिल किया गया।

विकास को मिशन के रूप में स्वीकार करने वाले चाहे वह **प्रोफेसर कुरियन** रहे हैं जिन्होंने दुग्ध के क्षेत्र में स्थानीय लोगों के साथ बैठक करके एक नवीन क्रांति को जन्म दिया या 70 के दशक में उत्तराखंड में जंगलों की कटाई को रोकने के लिए चलाया गया **चिपको आंदोलन** रहा हो।

उपसंहार:-

मीडिया और स्थानीय संस्कृति को ध्यान में रखते हुए जो परिवर्तन हुआ। उसमें तमाम ऐसे लोग भी हैं, जो चर्चा में नहीं आए जिसमें पुणे के पास उरली कंचन स्थिति **भारतीय एग्रो इंडस्ट्रीज फाउंडेशन** के प्रमुख **मणिभाई देसाई** हो, जिन्होंने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान के जरिए नस्ल सुधारने पर बल दिया। आदिवासी इलाकों में स्वास्थ्य कार्यक्रमों का होना । शोषण के विरुद्ध विरोध किया जाना, अंधविश्वास को तिलांजलि देना आदि ऐसे अनेकों क्षेत्र रहे, जिसमें संचार और स्थानीय प्रसार माध्यमों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ सूची:----

1. Some experience in in preparing for a satellite television experiment for rural India –1981

2. Planning for satellite broadcasting the Indian instructional TV experiment 1976
3. International telecommunication Union December 2005
4. Pearson education in India 1947
5. Vigyan prasar A2Z network department of science and technology January 2013
6. Non discript village in in Khera that incubated India's television revolution forgotten in history December 2015
7. Khera communication project satellite application centre November 2014
8. jhabua development communication project satellite application centre November 2015
9. Global diffusion of the internet in India watergems communication of the association for information system.
10. Desai, Ashok v. (2007) reinventing public service delivery in India
11. Marconi wireless telegraph company Tesla contribution to radio waves propagation
12. TV viewership on the rise in India July 2017
13. Identity and consumerism on television in India 2016
14. TV signal to go digital by 2014
15. Communication for development goes beyond providing information October 2011
16. Singhal Arvind : development communication where is at stand today.
17. Karnik Kiran romesh 1978 planning for satellite broadcasting the Indian satellite television experiment.
18. Shreenivasan: no free lunch designing the Indian national satellite 1981.
19. The Indian remote sensing satellite program overview 2016

Smt. Keerti Anand
Assistant Professor Sociology , Prem Kishan Khanna Government Degree College, Jalalabad Shahjahanpur.